E-Content for student of Patliputra University Patna ,Bihar.

Course - BA honours Part-3

subject - Hindi ,paper 6 unit 1

Topics -शब्द शक्ति किसे कहते हैं?विभिन्न शब्द शक्तियों का परिचय देते हुए लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति का अंतर स्पष्ट कीजिए।

■ डॉ प्रफुल्ल कुमार। एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, आर आर एस कॉलेज मोकामा।

शब्द ही वह साधन है जिसके द्वारा साहित्य की अभिव्यक्ति संभव होती है।शब्द वही उपयोगी है जिसका अर्थ है।दूसरे शब्दों में अर्थपूर्ण शब्द ही शब्द कहलाते हैं।

साहित्य की विधा में शब्दों का प्रयोग होता है। यह साहित्य में वाचक, लक्षक और व्यंजक के रूप में गृहित होते हैं। इसी प्रकार शब्दार्थ भी वाच्यार्थ,लक्ष्यार्थ और व्यंजक तीन रूपों में अपेक्षित है।इन्हीं शब्दों और अर्थों की अंतर्निहित अर्थवत्ता का बोध कराने वाली शक्ति शब्द शक्ति है ।शब्द शक्ति द्वारा शब्दों का अर्थ बोध

होता है।इस शक्ति को अर्थ बोधक व्यापार का मूल कारण भी कहते हहै।यह शक्ति एक प्रकार से शब्द और अर्थ का समन्वय ही है।शब्द के कई पर्यायवाची हैं जैसे- वाक्, वाणी,गिर, गिरा आदि।शब्द अक्षर है क्योंकि अक्षरों(नहीं नष्ट होने वाले)से बना होता है।इस प्रकार अर्थ के भी कई पर्यायवाची हैं,जैसे – अभिप्राय,तात्पर्य,मतलब आदि। के रीति कालीन आचार्य चिंतामणि ने शब्द और अर्थ में भेद बतलाते हुए लिखा है-**"जो सुन पड़े वो शब्द है,समुझि परै सो अर्थ।** उनके कथन का तात्पर्य स्पष्ट है।इसी शब्द और अर्थ के समन्वय शब्द शक्ति कहा जा सकता है। शब्दों के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं- **वाचक,लक्षक और व्यंजक** ।इन्हीं के अनुरूप अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं- **वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ।** शब्द और अर्थ के अनुरूप ही तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ होती है- **अभिधा,लक्षणा और व्यंजना।**

मीमांसक कुमारिल भट्ट एक चौथी शब्द शक्ति **तात्पर्या** शक्ति भी मानते हैं।

(1)-- अभिधा-

मुख्य अर्थ का प्रत्यक्ष बोध कराने वाली शब्द शक्ति को अभिधा कहते हैं।मुख्य या प्रथम अर्थ का बोधक होने के कारण उसे मुख्य या अग्रिमा भी कहते हैं। मम्मट के अनुसार-**"स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।"** अर्थात् साक्षात संकेतिक (गुण,जाति,द्रव्य,क्रिया वाचक)अर्थ जिसे मुख्यार्थ कहा जाता है, उसका बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा शक्ति कहते हैं।प्रत्येक शब्द का एक अर्थ प्रयोग में प्रचलित और प्रसिद्ध रहता है। इसलिए उस शब्द को सुनते ही वह प्रसिद्ध अर्थ मन में अनायास जग पड़ता है। पंडितराज जगन्नाथ ने शब्द और अर्थ के परस्पर संबंध को अभिधा कहा है। उदाहरण के लिए- **" देखो हाथी आया"** कह देने से एक विशेष हाथी की आकृति मन में अनायास आ जाती है।यही अर्थ बोध अभिधा है।

हिन्दी के आचार्यों में भिखारी दास 'काव्य निर्णय' में अभिधा का लक्षण इस प्रकार लिखते हैं- "**अनेकार्थ हू**

शब्द में एक अर्थ की व्यक्ति। तेहि वाच्यारथ को कहे सज्जन अभिधा शक्ति।"

अभिधा शब्द शक्ति से जिन वाचक शब्दों का अर्थबोध होता है वह तीन प्रकार के होते हैं- **रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ ।**

- **रूढ़-** रुढ़ या रूढ़ि ऐसे शब्द हैं जिनकी व्युत्पत्ति नहीं की जा सकती है।यह शब्द अखंड शक्ति से अर्थ का ध्योतन करते हैं। जैसे- पेड़, पशु, घर आदि।

-यौगिक- यौगिक वे शब्द हैं जिनकी व्युत्पत्ति हो सकती है। इसका अर्थ उनके अवयवों से ज्ञात होता है, जैसे- भूपति =भू+पति अथवा भूमि का स्वामी ।

-योगरुढि-योगरूढ़ि शब्द वे हैं जो यौगिक होते हैं। यह यौगिक शब्द अपने अलग-अलग खंडों का अर्थ ग्रहण नहीं कर के विशिष्ट अर्थ व्यक्त करते हैं।जैसे- पंकज=पंक+ज अर्थात् कीचड़ में जन्म लेने वाला। पंक में सेवार, घोंघा, कमल आदि सभी जन्म लेते हैं, परंतु पंकज शब्द केवल कमल के अर्थ में

रूढ़ हो गया है। अतः पंकज कहने से केवल कमल का बोध होता है।

2) लक्षणा- मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से संबंधित अर्थ की प्रतीति जिस शब्द शक्ति के माध्यम से होती है, उसे लक्षणा कहते हैं। मम्मट ने लिखा है-

"मुख्यार्थवाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात।
अन्यऽअर्थो लक्ष्यते यत सा लक्षणारोपिता क्रिया।"

अर्थात् मुख्य अर्थ के बाधित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस क्रिया शक्ति द्वारा मुख्य अर्थ से सम्बन्ध रखने वाला अन्य अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं।

इस प्रकार रचना के व्यापार के लिए तीन बातें आवश्यक हैं- **मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में सम्बन्ध, रूढ़ि या प्रयोजन।** जब मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होता है तब लक्षणा से काम लिया जाता है। जैसे- मोहन गधा है।इस वाक्य में मोहन (व्यक्ति) गधा (पशु) कैसे हो सकता है। यहाँ गधा

का अर्थ मूर्ख लेना पड़ता है और समझा जाएगा मोहन मूर्ख है।

मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध- मुख्यार्थ बाधित होने पर उस शब्द के लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से संबंध होना चाहिए। जैसे- मोहन गधा है। गधा का लक्ष्यार्थ मंद शुष्क या मूर्ख मुख्यार्थ से संबंधित है।

रूढ़ि या प्रयोजन- रूढ़ि का अर्थ है प्रसिद्धि। इसमें शब्द के अर्थ के लिए तर्क नहीं होता है। जिस अर्थ में सदा से प्रचलित शब्द है, ठीक वही अर्थ लेना पड़ता है। जैसे- **नौ दो ग्यारह होना** का अर्थ भाग जाना होता है, जो रूढ़ हो गया है।अब गणित के हिसाब से भाग जाना अर्थ करने के लिए बीस दो बाइस होना, एग्यारह दो तेरह होना, कह कर काम नहीं चलाया जा सकता है।किसी खास प्रयोजन से किसी शब्द का प्रयोग करने पर मुख्यार्थ बाधित हो जाता है और उसके प्रयोजन से ही अर्थ व्यंजित होता है। जैसे- गंगा में गांव है। बहती हुई गंगा में कोई मकान हो यह संभव नहीं है। अतः गंगा के किनारे गांव हो सकता है, परंतु गंगा का अभिप्राय

गांव की पवित्रता बतलाना है। गंगा से पवित्रता का बोध होना इसका प्रयोजन है।

3) व्यंजना-व्यंजना शब्द की निष्पत्ति वि+अंजना है। अर्थात् विशेष प्रकार का अंजन ही व्यंजना है। जिस प्रकार अंजन लगाने से नेत्र ज्योति बढ़ जाती है और परोक्ष वस्तुएं भी दृष्टिगोचर होने लगती है, उसी प्रकार जब अभिधा एवं लक्षणा शक्तियाँ अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती हैं तब व्यंजना शक्ति काव्य के गुढ़ अर्थ को प्रकट करती है। अतः कहना चाहिए कि अभिधा एवं लक्षणा शक्तियों का अपना-अपना कार्य कर शांत हो जाने पर जिस शक्ति के द्वारा अर्थ का ज्ञान होता है, उसे व्यंजना शक्ति कहते हैं। जैसे- संध्या हो गयी।इसका अभिधा से प्राप्त अर्थ है 'सूर्यास्त हो गया' परंतु वक्ता और श्रोता के अनुसार इसके कई अर्थ हो सकते हैं।यदि यह वाक्य एक पथिक दूसरे से कहे तो अर्थ होगा 'कहीं रुक जाना चाहिए' अंधेरे में चलना उचित नहीं है।चोर एक दूसरे से कहे तो अर्थ होगा कि चोरी

करने चलना चाहिए। सास बहू से कहें तो अर्थ होगा कि- चुल्हा जलाओ।

उपर्युक्त शब्द शक्तियों के अतिरिक्त एक और शब्द शक्ति तात्पर्या शब्द शक्ति है। मम्मट के अनुसार संबंधित पदों का अर्थ बतलाना अभिधा का कार्य है। उनके बिखरे हुए पदों के अर्थों को परस्पर एक-दूसरे के साथ जोड़कर जो वाक्य बनता है उस वाक्य के अर्थ जो शक्ति बोध कराती है उसे तात्पर्य वृत्ति कहते हैं। इस वृत्ति का बोधक वाक्य है।

<u>लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति में अंतर</u>

लक्षणा के लिए मुख्यार्थ में बाधा आवश्यक है, किंतु व्यंजना के लिए मुख्यार्थ में बाधा की अपेक्षा गुढ़ार्थ व्यक्त होता है। लक्षणा शब्द शक्ति में मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ की कहीं न कहीं आपस में गुण या लक्षण में समानता होती है। इसके विपरीत व्यंजना में मुख्यार्थ और व्यंग्यार्थ में कोई सीधा संबंध नहीं होता है। लक्षणा से केवल एक अर्थ की प्रतीति होती है जबकि व्यंजना शब्द शक्ति द्वारा प्रसंग के अनुरूप अनेक अर्थ की प्रतीति संभव है।लक्षणा शब्द

शक्ति अर्थ तक ही सीमित है जबकि व्यंजना शब्द शक्ति शब्द और अर्थ दोनों में रहती है।

****